श्री शारदा व बही पूजा

की

सामग्री

बही, चोपड़ा आदि
नई कलम
दवात
पौरा
कुंकुम
वासक्षेप या कुसुमाञ्जली
मौली
जल या पञ्चामृत
चन्दन व केसर
सुगन्धित पुष्प
धूप व अगर बत्ती
शुद्ध घी का दीपक
अक्षत, (अखण्ड चावल)
नैवेद्य (पकवान मिठाई आदि)
फल
कपूर
आरती के लिये थाली



श्री दीपमालिका पूजन

श्री शारदा व वही पूजन सहित

लेखक—

पं० ईश्वरलाल जैन स्नातक

न्यायतीर्थ विद्याभूषण विशारद

सम्पादक व प्रकाशक—

शाह नानालाल एम चौरड़िया,

आनरेरी मैनेजर—

श्री तिलक विजय जैन ज्ञान भण्डार,

सिलदर (सिरोही) वाया माउण्ट आबू

वीर सम्वत्	प्रथमावृत्ति	विक्रम सम्वत्
२४६९	१०००	२०००

मूल्य—पाच आना

-९- दीवाली का भजन -२-

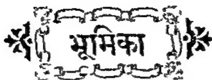
(तर्ज—भैरवा-अब तो प्रभु जी का ले लो शरण)

जया जग स्वामी वीर जिनंद ॥ टेर ॥

नगर आपापा में प्रभु आये, भविजन को उपकार करंद ॥१
निज निर्वान समय को जानी, सोला पहर प्रभु धर्म कहंद ॥२
कार्तिक वदि पदरम की राते, प्रात काल प्रभु मुक्ति लहंद ॥३
परमातम पद छिनक में लीनो, आठ कर्म को दूर हरंद ॥४
कल्याणक निर्वाण मगोत्सव, कारण मिल कर आय सुरींद ॥५
पावा नगरी नाम कहाया, अस्त भया जिहां ज्ञान दिनंद ॥६
नव मल्ली नव लेच्छी राजा, शोक अतिशय दिल में धरंद ॥७
भाव उद्योत गया अब जग से, द्रव्यउद्योत को दाप करंद ॥८
तिस कारण दीवाली होइ, ध्यान धरो प्रभु वीर जिनंद ॥९
कार्तिक सुदि एकम दिन आवे, गौतम केवल ज्ञान गहंद ॥१०
गौतम राम परम पद पामे, वल्लभ चित में हर्ष अमंद ॥११



मुद्रक—
प० ईश्वरलाल जैन स्नातक
प्रभात प्रिंटिङ्ग प्रेस चूड़ी सराय मुलतान शहर।



दीवालीपर्व का माहात्म्य—आज से लगभग अढाई हजार वर्ष पहिले जैन धर्म के २४वें तीर्थङ्कर श्री महावीर स्वामी का कार्तिकवदि अमावस्या को पावापुरी नगरी में निर्वाण हुआ था। भगवान का निर्वाणोत्सव मनाने कल्पि देवताओं व मनुष्यों ने अनेकों दीपक जागृत कर अमावस्या के अन्धकार में खूब प्रकाश किया था उसी ही समय से दीवाली का पर्व प्रति वर्ष मनाया जाने लगा।

भगवान महावीर प्रभु के निर्वाण के साथ उसी दिन उन के मुख्य शिष्य श्री गौतम स्वामी जी को केवलज्ञान हुआ, इस से दीवाली पर्व और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गया।

वर्तमान समय में अन्य धर्मावलम्बी भी इस पर्व का सम्बन्ध अपने अवतारों व प्रवर्तकों से मान कर बड़े आनन्द और उत्साह से इस पर्व को मनाते हैं। और इस कारण यह पर्व लोकप्रिय हो गया है।

इस समय भले ही कोई इस का सम्बन्ध श्री रामचन्द्र जी, स्वामी दयानन्द जी व स्वामी रामतीर्थ जी आदि

से बतलायें परन्तु इस पर्व का प्रारम्भ तो भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण से मानना होगा। जो लोग इस पर्व का प्रारम्भ हठात् दूसरी वातों से जोड़ते हैं उन का ध्यान निष्पक्ष अजैन विद्वानों की ओर आकृष्ट करना चाहता हूं, उन के निम्न दिये गये विचारों का अवलोकन कर पाठक स्वयं निर्णय कर कि इस पर्व का प्रारम्भ कहां से है--

'भगवान वीर सारे संसार के कल्याण कर्ता, सर्वोत्कृष्ट परमात्मा, पूर्ण अहिंसा वादी और सत्यप्रिय थे। दीवाली का पुनीत पर्व उन्हीं के निर्वाणोपलक्ष्य में उन की कृतज्ञ जनता ने निर्माण किया था।'

--श्रीयुत लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक।

उन्हीं लोगों ने जिन्हों ने जैनधर्म धारण किया था--अपने परम गुरु की स्मृति में जबकि वीर प्रभु ने निर्वाण प्राप्त किया था, दीपक जलाये थे और बड़ा विशद उत्सव रचाया था तभी से भारत वर्ष में दीपावली का त्योहार मनाया जाने लगा।

--रवीन्द्रनाथ टागौर।

' वीर प्रभु के गर्भ जन्म के दिन की अपेक्षा उनके निर्वाण का दिन और भी अधिक महत्व प्रद है। जिस दिन कृतज्ञ जनता ने उन के मुक्ति लाभ की खुशी में दीवाली नामक त्योहार प्रचलित करके अपनी अनुपमेय भक्ति का परिचय दिया था।

--साधु टी० एल० वास्वानी।

" जिन-ज्ञातपुत्र का निर्वाण दिन उनके जन्म दिन की अपेक्षा अधिक उत्सव का दिवस था क्योंकि महावीर ने उस दिन निर्वाण को प्राप्त किया था। उन का मोक्ष कार्तिक वदी अमावस्या के दिन हुवा

उन की मोक्ष प्राप्ति के अवसर पर पावापुरी निवासियों ने दीपावलि की थी, उस दिन से एक पावापुरी ही नहीं बल्कि भारत वर्ष की सभी नगरियों में महावीर निर्वाण के उपलक्ष्य में दीपोत्सव करने लगे, और यह कुछ सदियों में जातीय महोत्सव हो गया। दीपक ज्ञान का द्योतक है, ज्ञानी और ज्ञान दाता महावीर की स्मृति के लिये इससे उपयुक्त अधिक महोत्सव और कौनसा हो सकता है ?

—हिन्दी के आद्य प्रचारक श्री भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

संसार का कोई भी धर्म महावीर की दया के सिद्धान्तों की समानता नहीं कर सकता। महावीर सारी दुनिया के अकारण बन्धु जीवन मुक्त परमात्मा थे। दीपमालिका का पर्व उन्हीं के मोक्ष लाभ समय से सारे भारत वर्ष में प्रचलित हुवा।

—श्री ईश्वर चन्द्र विद्यासागर।

दीवाली पर्व की तरह भाई दूजका प्रारम्भ भी उसी समय से हुआ। भगवान महावीर के निर्वाण के पश्चात् महावीर स्वामी के बड़े भाई राजा नन्दीवर्द्धन का शोक दूर करने के लिये उन की बहिन सुदर्शना ने उन्हें बुलवाकर भोजन कराया और तब से उनकी यादगार में ऐसी प्रथा आज तक चली आरही है–कि बहिन अपने भाई को बुला कर भोजन कराती हैं।

भगवान महावीर का निर्वाणोत्सव समस्त भारतवर्ष में आनन्द व उत्साह से मनाया जाता है। विशेषत भगवान की निर्वाणभूमि पावापुरी में तो बड़ी धूम धाम से मेला लगता है और प्रतिवर्ष हजारों व्यक्ति इकट्ठे होते हैं।

गुजरात काठियावाड आदि देशों में दीवाली से ही वर्ष का प्रारम्भ मानते हैं, और समस्त भारतवर्ष में व्यापारी वर्ग इसी ही दिन से नयी वही आदि रखते एवं वही पूजा आदि करते हैं। वही पूजा वास्तव में ज्ञान की पूजा ही है। क्योंकि तीर्थङ्करों की वाणी सुनने के लिये आर्यावर्त का यह अन्तिम दिन था। इस लिये ज्ञान की शारदा-सरस्वती की पूजा भी इसी दिन होने लगी।

श्री शारदा व वही पूजा का विधि-विधान अन्य धर्मों में भिन्न २ तरह से मिलता है परन्तु जैनधर्मानुयायियों को जैन विधि से ही पूजन करना चाहिये, उन्हीं के लाभार्थ यह पुस्तक पाठकों के समक्ष रखी जा रही है।

इस पवित्र पर्व के दिन कई व्यक्ति जुआ खेलना, पटाखे चलाना आदि भी अपना आवश्यक कर्त्तव्य समझते हैं। परन्तु जो बुराई है वह तो बुराई ही रहेगी, भलेही किसी अच्छे दिन ही क्यों न की जावे। इस लिये इन कुप्रथाओं को सर्वथा छोड़ देना चाहिये और इस पर्व को उत्तमोत्तम क्रियाओं से मनाना चाहिये, वास्तव में लौकिक तथा लोकोत्तर सुख प्राप्त करने के लिये यह एक अपूर्व पर्व है।

श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल पंजाब
गुजरांवाला, १२-८-४३

हीरालाल जैन

विषय सूची

समपर्ण

स्वपर शास्त्र पारगत,

चारित्र चूड़ामणि परम शान्त सपन्न

विश्वोपकारी मुनिराज

श्री श्री १००८ मुनि श्री तिलक विजय जी महाराज

\+ की पवित्र सेवा में +

यह

लघु पुस्तक

सादर समर्पित है ।

आप की ही

छत्र छाया में अनेक आत्मार्थी भक्त जीव

अपनी आत्मा का साधन

कर रहे हैं ।

लेखक —



मुनि महाराज श्री श्री श्री १००८
श्री त्रिलोक विजय जी महाराज मु० सिवाड़

दीपमालिका पूजन

श्री शारदा एवं वही पूजा सहित

॥ मङ्गलाचरण ॥

श्री मते वीरनाथाय सनाथायाद्भुतश्रिया ।
महानन्दसरोराज मरालायार्हते नम ॥

दीपमालिका पर्व भगवान महावीर के निर्वाण से प्रारम्भ हुआ परम पवित्र एवं शुभ पर्व है। इस सर्वोत्तम पर्व को प्राय सभी जातियां तथा प्रत्येक धर्म के अनुयायी किसी न किसी रूप में आराधन करते हुए बड़े महोत्सव व आनन्द से मनाते है। गुजरात मे इसी दिन

से नये वर्ष का प्रारम्भ माना जाता है, और समस्त भारत वर्ष के व्यापारी इस शुभ और पवित्र दिन से श्री शारदा व बही पूजन कर अपने नये वर्ष का हिसाब चालू करते है। जैन समाज के लिये यह दिन बहुत अधिक महत्व का है, प्रत्येक जैनधर्मानुयायी को श्री शारदा व बही पूजन जैन शास्त्रानुसार-विधि से करना चाहिये, अब यहा पर जैन पद्धति अनुसार श्री शारदा व बही पूजन लिखते हैं।

⁘ विधि में ध्यान देने योग्य बातें ⁘

१—पूजन प्रारम्भ करने से पहिले पूजा गृह (पूजा के स्थान) को सुन्दर चित्रो तथा अन्य सजावट की चीजों से सुशोभित कर लेना चाहिये।

२—पूजा करने वाले सज्जन

हो एव शुद्ध

दिव्याभरण से अलकृत हो पूजन के लिये तैय्यार होना चाहिये ।

३-शुभ चौघड़िया एवं नक्षत्र देखकर शुभ मुहूर्त में नई वही, दस्तरी, कागज, कलम, दवात आदि शुद्ध स्वच्छ चौकी, पट्टे या बाजोट पर पूर्व या उत्तर दिशा में स्थापन करे ।

४-चौकी के आस पास शुद्ध घी के दीपक तथा धूप, अगरबत्ती आदि जाग्रत करने चाहिये ।

५-पूजन करने वाले सज्जनों को शुद्ध आसन पर बैठकर तथा तीन नवकार मन्त्र बोलकर अपने दायें (सीधे) हाथ में कङ्कण अर्थात् मोली लच्छा बांध लेना चाहिये । इसी तरह कलम, दवात आदि को भी नवकारमन्त्र बोलते हुए मोली लच्छा बांधना चाहिये ।

६-सामने ही उत्तम चौकी या पट्टे पर चांदी की या अन्य किसी शुद्ध रकेबी मे सजावट

कर उस में शारदा अथवा श्री गौतम प्रभु की मूर्ति अथवा चित्र स्थापित करें।

वही पूजा

पूजन की सकल सामग्री सम्पन्न होने पर शुद्ध लेखनी से वही पर सर्व प्रथम× सुन्दर अक्षरों में मन्दिर के शिखर की तरह एक से नव तक 'श्री' क्रमश लिखे। अगर वही छोटी हो तो उसके अनुसार सात, पांच या तीन लाइनों में लिखे—

× पहिले कुंकुम की कलम से स्वस्तिक कर फिर [illegible] श्री का शिखर व महापुरुषों के नाम लिखे [illegible] कई स्थानों पर प्रथा है कई स्थानों में [illegible] के नाम फिर श्री का शिखर व स्वस्तिक करते हैं इत्यादि [illegible] में से किसी के लिये भी कोई खास आग्रह नहीं है। कुल मर्यादा व परम्परानुसार जिसे जो उचित मालूम हो वैसा लिखने का प्रयत्न करना चाहिये।

ॐ अर्हं नम

श्री

श्री श्री

श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री लाभ  श्री शुभ

७४॥ वन्देवीरम् ॥ श्री परमात्माने नम । श्री सद्गुरुभ्यो नम । श्री सरस्वत्ये नम. । श्री गौतम स्वामी जी जैसी लब्धि हो। श्री केशरिया जी जैसा भण्डार भरपूर हो । श्री भरतचक्रवर्ती जैसी ऋद्धि प्राप्त हो। श्री अ
बुद्धि प्राप्त श्री बाहुबल जी जैसा

श्री कयवन्ना सेठ जैसा सौभाग्य मिले, तथा श्री धन्ना शालिभद्र जी जैसी सम्पत्ति प्राप्त हो।

अथ वीर संवत् २४   विक्रम सं० २०
शुभ मिति कार्तिक सुदि   वार तदनुसार
तारीख   माह   ईस्वी सन् १६

इस तरह से नये वर्ष, संवत्, मास, दिन आदि लिखकर नीचे नया हिसाब चालू कर दें।

इस प्रकार लिखने के पश्चात् वहीं रख कर उस के चारों ओर फिरती जल धारा देवे। और उसके बाद वासक्षेप या कुंकुम अक्षत (चावल) और फूल हाथ में लेकर निम्नलिखित मङ्गल व आह्वान मन्त्र पढ़ कर सन्मुख चढ़ा दे।

॥ मंगल श्लोक ॥

मङ्गलं भगवान वीरो, मङ्गलं गौतम प्रभु।
मङ्गलं स्थूलभद्राद्या, जैनधर्मोस्तु मङ्गलम्॥

॥ आह्वान मन्त्र ॥

ॐ ह्रीं श्रीं ह्रूं शारदे ममगृहे आगच्छ आगच्छ स्वाहा।

यह पढ़कर हाथ में ली हुई कुसुमाञ्जलि चढ़ा दे, और हाथ जोड कर भक्ति पूर्वक निम्न स्तुति पाठ करे।

स्तुति

नत्र श्राय श्रीमदर्हन्त· सिद्धा सिद्धिपुरीपदम् ॥
आचाया पञ्चधाचार वाचका वाचनाचराम् ॥१॥
सा नत्र सिद्धि साहाय्य, वितन्वनु विवेकिनो ॥
मङ्गलाना च सर्वेषा-माद्य भवति मङ्गलम् ॥२॥
अर्हमित्यक्षर माया- बीजं च प्रणवाक्षरम् ॥
एन नाना स्वरूप च, ध्येय ध्यायन्ति योगिन. ॥३॥
हृत्पद्मषोडशदल-स्थापित षोडशाक्षरम् ॥
परमेष्ठि स्तुतेर्बीज ध्यायेदक्षरद मुदा ॥४॥
मन्त्राणामादिम मन्त्र तन्त्र विघ्नौघनिग्रहे ॥
ये स्मरन्ति सदैवेन ,ते भवन्ति जिनप्रभा ॥५॥

इस के बाद मन्त्रों द्वारा अष्टद्रव्य [१ जल २ चन्दन, ३ पुष्प, ४ धूप, ५ दीप, ६ अक्षत (अखण्ड चावल) ७ नैवेद्य (मिठाई) और ८ फल] से पूजन करे।

ॐ ह्रीं श्री भगवत्यै, केवल ज्ञान स्वरूपायै, लोकालोक प्रकाशिकायै सरस्वत्यै 'जल' समर्पयामि स्वाहा ।

यह मन्त्र पढ़ कर जल चढ़ावे ।

ॐ ह्रीं श्रीं भगवत्यै, केवल ज्ञान स्वरूपायै, लोकालोक प्रकाशिकायै सरस्वत्यै 'चन्दन' समर्पयामि स्वाहा ।

यह मन्त्र पढ कर चन्दन चढावे ।

ॐ ह्रीं श्रीं भगवत्यै, केवल ज्ञान स्वरूपायै, लोकालोक प्रकाशिकायै सरस्वत्यै 'पुष्प' समर्पयामि स्वाहा ।

यह मन्त्र पढ कर सुगन्धित फूल चढावे ।

ॐ ह्रीं श्रीं भगवत्यै, केवल ज्ञान स्वरूपायै, लोकालोक प्रकाशिकायै सरस्वत्यै 'धूप' समर्पयामि स्वाहा ।

यह मन्त्र पढ कर धूप चढावे ।

ॐ ह्रीं श्रीं भगवत्यै, केवल ज्ञान स्वरूपायै, लोकालोक प्रकाशिकायै सरस्वत्यै 'दीप' समर्पयामि स्वाहा ।

यह मन्त्र पढ कर दीपक से पूजा करे ।

ॐ ह्रीं श्रीं भगवत्यै, केवल ज्ञान स्वरूपायै, लोकालोक प्रकाशिकायै सरस्वत्यै 'अक्षत' समर्पयामि स्वाहा ।

यह मन्त्र पढ कर अखण्ड चावल

ॐ ह्रीं श्रीं भगवत्यै, केवल ज्ञान स्वरूपायै, लोकालोक प्रकाशिकायै सरस्वत्यै 'नैवेद्य' समर्पयामि स्वाहा ।

यह मन्त्र पढ़कर मिठाई या मिश्री आदि चढ़ावे ।

ॐ ह्रीं श्रीं भगवत्यै, केवल ज्ञान स्वरूपायै, लोकालोक प्रकाशिकायै सरस्वत्यै 'फल' समर्पयामि स्वाहा ।

यह मन्त्र पढ़कर फल चढ़ावे ।

इस प्रकार पूजन कर लेने के बाद हाथ जोड़ कर भक्ति पूर्वक श्री शारदा स्तोत्र पढे ।

॥ श्री शारदा सरस्वती स्तोत्र ॥

(इन्द्रवज्रा वृत्तम)

वाग्देवते भक्तिमता स्वशक्ति• कलाय विभ्रासित विग्रहा मे ॥
बोध निशुद्ध भवति विधत्ता कलाय विभ्रासित विग्रहा मे ॥१॥
अब्ज प्रवीणा कलहंसपत्रा कृतस्मरेणा नमता निहतुम् ॥
अकप्रवीणा कलहसपत्रा सरस्वती शश्वद् पोहताह ॥२॥
ब्राह्मी विजेपीष्ट विनिद्रकुद–प्रभावदाता घनगर्जितस्य ॥
स्वरेण जैत्री ऋतुनां स्वकीय–प्रभावदाता घनगर्जितस्य ॥३॥
मुक्ताक्षमाला ... सूज्वलाभाति करे
... शा वाग्देव्यमेके मनयोति

[illegible] प्रस्या समाति स्यालुनाना मदपातकानि ॥
[illegible] मार्गेन प्रु टॉक स्यालुनाना म[illegible]पातकानि ॥४॥
[illegible] यानामि येनामि विराजि हस्ता ॥
[illegible] विद्या मुया पूरमहूर दु मा ॥६॥
[illegible] ंक्रिदव मयन मरालयन प्रमदेन यात ॥
[illegible] सुविनम्य नय मगलयेन प्रमदेन यात ॥७॥
[illegible] प्रमद करावि[illegible]ल यदि याऽर्चति तैऽग्रि युग्म ॥
[illegible] प्रमद करावि सखरय याहि विदुषा प्रविश्य ॥८॥
[illegible] प्रसादात्तव [illegible] लताभिरामो दितमानवेश ॥
[illegible] सकिभिरव चिन्ताग्र माभिरामा दिनमानवेश ॥९॥
मिताशुका व नयनाभिरामा मूर्ति सनाराध्यमदेन मनुष्य ॥
मिताशुका व नयनाभिरामावकारमर्य क्षितिपावतस ॥१०॥
यनादिश्व त्वामनु सर्वे तीर्थ्यं समाजिता मानव मरतकेन ॥
त्वादिना निदलित नरेन्द्र समाजिता मानव मरतकेन ॥११॥
सर्वत वक्तावरतामसमकलीना मानीगती प्रपरामधर पादर्शन ॥
[illegible] वक्तावरतामसम कलाना प्रीणातु [illegible]
[illegible]स्तुति निचिह मक्ति जहपते गुंफेगिर[illegible]

॥ आरती ॥

(तर्ज— ॐ जय जगदीश हरे)

ॐ जय जय जिनवाणी ।
आतम कमल विकाशे, ध्यावें मुनि ज्ञानी ॥ टेक ॥

(१)

तीर्थंकर त्रिपदी फरमावें, गणधर भाष्य रचे ।
ज्ञान का मर्म जा पावे, नहिं भव-जाल फसे ॥ ॐ ॥

(२)

श्री सर्वज्ञदेव की वाणी, मिथ्यावाद हरे ।
नय, प्रमाण की ज्योती, पूर्ण प्रकाश करे ॥ ॐ ॥

(३)

ज्ञान कल्पतरु, कामधेनु है, ज्ञान सुधासागर ।
ज्ञान, क्रिया, श्रद्धा से, लहें पद अजरामर ॥ ॐ ॥

(४)

वीणा वादिनी, ग्रन्थधारिणी जय शारदा माता ।
हंसवाहिनी, देवी, बुध–आश्रय–दाता ॥ ॐ ॥

(५)

जड, चेतन का भेद ज्ञान से ज्ञानी हैं पाते ।
"राम" प्राप्त कर केवल, भवजल तर जाते ॥ ॐ ॥

इस प्रकार आरती करने के बाद गौतमाष्टक पाठ करना चाहिये

ज्ञान प्रभातु प्रवगा ममाति श्यालुनाना भवपातकानि ॥
त्वनेमपा मारति पु हरीन शयालुनाना मन्पारपानि ।५॥
प्रौढ़ प्रभाना ममपुस्तकन दशतामि यनामि विराजि हस्ता ॥
प्रौढ़ प्रभारा सपपुम्तकेन निश्रा सुधा पुरमद्दूर दे सा: ॥६॥
तुभ्य प्रणाम क्रियत मयन मरालयन प्रमदन गात ॥
शांति प्रतापै, भुवितस्य नम्र मगालयेन प्रमदन यात ॥७॥
स्त्यारविन्द अमद कराति दल यदि याऽचात तेऽग्रि युग्म ॥
स्त्यारविंद अमद कराति सम्वरय गाहि विदुषा प्रविश्य ॥८॥
पाद प्रसादात्तव रूपसपत् नराभिरामो क्षितमानवेश ॥
अयन्नर सुक्तिभिरेव निन्गाभ्र रवाभिरामा दितमानवेश ॥९॥
सितांशुका ते नयनाभिरामा मूर्ति सनाराध्यमवेन मनुष्य ॥
सितांगुरां ने नयनाभिरामाधरारवर्ग क्षितिपाववस ।१०॥
यनस्थित स्वामप्तु सर्वं तीर्थ्यै समाजिता मानव मरतवन ॥
दुषादिना निदलित नरेन्द्र समाजिता मानत मरतकेन ॥११॥
सर्वत्र वक्तारवताससमक्लीना मानींगती प्रयतमधर पादशैन ॥
सवत्र वक्तावरतामसमक्लौंना प्रीणातु विश्रुतयश श्रुतदेवतान
कुमस्तुति निमिड भक्ति जडपूतैगुर्णैर्गिरामितिगिरामधि देवता सा
वालानुकप इतिरीपयतुप्रसाद स्मराश मपिजिनप्रभसूरि वर्या ॥

उक्त स्तोत्र बोलने के अनन्तर एक थाली में दीपक व कपूर जाग्रत करके आरती उतारनी

॥ आरती ॥

(तर्ज — ॐ जय जगदीश हरे)

ॐ जय जय जिनवाणी ।
आतम कमल विकाशी, ध्यावें मुनि ज्ञानी ॥ टेक ॥

(१)

तीर्थंकर त्रिपदी फरमावें, गणधर भाष्य रचे ।
ज्ञान का मर्म जो पावे, नहिं भव जाल फसे ॥ ॐ ॥

(२)

श्री सर्वज्ञदेव की वाणी, मिथ्यावाद हरे ।
नय, प्रमाण की ज्योती, पूर्ण प्रकाश करे ॥ ॐ ॥

(३)

ज्ञान कल्पतरु, कामधेनु है, ज्ञान सुधा सागर ।
ज्ञान, क्रिया, श्रद्धा से, लहें पद अजरामर ॥ ॐ ॥

(४)

वीणा वादिनी, ग्रन्थधारिणी जय शारदा माता ।
हंसवाहिनी, देवी, सुर-आश्रय-दाता ॥ ॐ ॥

(५)

जड़, चेतन का भेद ज्ञान से ज्ञानी हैं पावे ।
"राम" प्राप्त कर केवल, भवजल तर जावे ॥ ॐ ॥

इस प्रकार आरती करने के बाद गौतमाष्टक

॥ श्री गौतमाष्टक ॥
(इन्द्रवज्रा वृत्तम्)

श्रीइन्द्रभूतिं वसुभूति पुत्रं, पृथ्वीभव गौतम गोत्र रत्नम् ।
स्तुवन्ति देवासुरमानवेन्द्रा स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥१॥
श्रीवर्धमानात् त्रिपदीमवाप्य मुहूर्तमात्रेण कृतानि येन ।
अङ्गानि पूर्वाणि चतुर्दशापि स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥२॥
श्रीवीर नाथेन पुरा प्रणीतं मन्त्र महानन्दसुखाय यस्य ॥
ध्यायन्त्यमी सूरिवरा समग्रा स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ३॥
यस्याभिधानं मुनयोपि सर्वे गृह्णन्ति भिक्षा भ्रमणस्य काले ।
मिष्टान्नपानाम्बर पूर्णकामा स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥४॥
अष्टापदाद्रौ गगने स्वशक्त्या ययौ जिनानां पदवन्दनाय ।
निशम्य तीर्थातिशयं सुरेभ्य स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥५॥
त्रिपञ्च सख्या शततापसानां तप कृशानामपुनर्भवाय ।
अक्षीण लब्ध्या परमान्नदाता स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥६॥
सदक्षिणं भोजनमेव देयं साधर्मिकं सघ सपर्ययेति ।
कैवल्य वस्त्र प्रददौ मुनीनां स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥७॥
शिवंगते भर्तरि वीर नाथे युग प्रधानत्वमिहैव मत्वा ।
पट्टाभिषेको विदधे सुरेन्द्रै स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥८॥
त्रैलोक्य बीज परमेष्ठि बीज सद्ज्ञान बीज जिन राज बीज ।
यन्नाम चोक्त विदधाति सिद्धिं स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥९॥
श्रीगौतमस्याष्टकमादरेण प्रबोधकाले मुनिपुङ्गवा ये ।
पठन्ति ते सूरि पदं सदैवा–नन्द लभन्ते सुतरां क्रमेण ॥१०॥

॥ गौतमाष्टक (२) ॥

अगूठे अमृत वसे लब्धितणो भण्डार।
ते गुरु गौतम समरिये वाछित फल दातार ॥१॥
प्रभु वचन त्रिपदी लही सूत्ररचे तिनवार।
चौदह पूरव में रचे लोकालोक विचार ॥२॥
भगवती सूत्रे करनमी बम्भि लिपि जयकार।
लोक लोकोत्तर सुख भणी भाषा लिपि आधार ॥३॥
वीर प्रभु सुखिया थया दीवाली दिनसार।
अन्तर मुहूर्त तत्क्षणे सुखियो सहु संसार ॥४॥
केवल ज्ञान लहे तदा श्रीगौतम गणधार।
सुरनर हरषभरी प्रभु करे अभिषेक उदार ॥५॥
सुरनर पषदा आगले भाषे श्रीश्रुत ज्ञान।
ज्ञानथकी जग जानियो द्रव्यादिक सुख जान ॥६॥
ते श्रुत ज्ञानकी पूजिये, धूप, दीप मनोहार।
वीर आगम अविचल रहा वर्ष इक्कीस हजार ॥७॥
गुरु गौतम अष्टक कही आणी हर्ष उल्लास।
भावधरी जे समरशे पूरे सरस्वती आस ॥८॥

पूर्वोक्त अष्टक समाप्त होने पर पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुह कर एकाग्र चित्त से निम्न

लिखित सरस्वती मन्त्र की एक, तीन या पाच मालायें जपे। धूप दीप जाग्रत रहना चाहिये।

॥ सरस्वती मन्त्र ॥

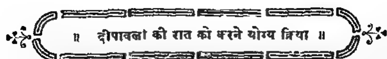
ॐ ह्रीं श्रीं क्ष्रीं ग्लीं श्रीं ह्रीं ऍं नमः।

इसके बाद निम्नलिखित श्लोकों से विसर्जन करते हुए विधि मे कोई दोष लगा हो उसके लिये क्षमा याचना करे।

आज्ञाहीन क्रिया हीन मन्त्र हीन च यत्कृतम्।
तत्सर्वं क्षम्यता देवि, प्रसीद परमेश्वरि ॥१॥
आह्वान नैव जानामि, नैव जानामि पूजनम्।
विसर्जन नैव जानामि, क्षमस्व परमेश्वरि ॥२॥
अपराध सहस्राणि क्रियन्ते निशशो मया।
तत्सर्वं क्षम्यता देवि, प्रसीद परमेश्वरि ॥३॥

इस प्रकार पूजन विधि समाप्त होने पर सुपात्र को यथोचित दान देना चाहिये, और उसके बाद रात्रि जागरण करना चाहिये।





॥ दीपावली की रात को करने योग्य क्रिया ॥

दीपावली की रात को जाग्रत रहते हुए रात्रि के चतुर्थ पहर रहने से पहले—

ॐ ह्रीं श्रीं महावीर स्वामी सर्वज्ञाय नम ।

ॐ ह्रीं श्रीं महावीर स्वामी पारंगताय नमः ।

इन मन्त्रो की २०–२० माला अर्थात् प्रत्येक का दो दो हजार का जाप करना चाहिये।

इसके बाद निम्नलिखित मन्त्र की भी २० माला अथवा दो हजार का जाप करना चाहिये।

ॐ ह्रीं श्रीं गोतम स्वामी केवल ज्ञानाय नम ।

इसके बाद दो घड़ी रात्रि बाकी रहे तब महावीर प्रभुका निर्वाणोत्सव मनाने केलिये अच्छे अच्छे स्वच्छ एव सुन्दर वस्त्रालङ्कार पहन कर और एक पात्र मे दीपक व मोदक लेकर श्री जिन मन्दिर मे जावे। भगवान के सन्मुख मोदक हस्त मे ग्रहण कर [illegible] स्तुति पढे ।

॥ दीवाली स्तुति ॥

पापाया पुरि चारु षष्ठ तपसा पर्यंक पर्यासन,
क्ष्मापाल प्रमुहस्तपाल विपुल श्रीशुक्रशाला मनु ।
मासे कार्तिक दर्शनागकरणे तुर्यारिकाते शुभे,
स्वाती य गिरमाप पाप रहित सस्तौमि वीर प्रभुम् ॥१॥
यद्भागमनोज्ञ्य प्रतरर ज्ञानाक्षराशि क्षणे,
सभूयाशु सुपव सततिग्हा चक्र महस्तत् क्षणात् ।
श्रीमन्नाभि भवादि वीरचरमास्ते श्रीजिनाधीश्वरा,
सचापानघचेतस निद्धता अथात्मनेनासि च ॥२॥
अर्थात्पूर्वमिद जगादजिनय श्रीवर्द्धमानाभिध,
तत्पश्चाद्गणनायका विरचया चक्रुस्तरा सूत्रत ।
श्रीमत्तीर्थं समर्थनैक समये सम्यक् दृशा भूस्पृशा,
भूयाद्भावुक कारक प्रवचन चेतश्चमत्कारियत् ॥३॥
श्रीतार्थाधिपतीर्थ भावनपरा सिद्धायिका देवता,
चचधक्र धरासुग सुरनता पायाद पायादसौ ।
अर्हन् श्रीजिनचन्द्रगीरसुमविना अभ्यात्मन प्राणिना,
यात्रक्ऽत्रमकष्ट हस्ति निधन शार्दूल विक्रीडितम् ॥४॥

इस स्तुति के बाद मोदक चढा दे और दीवाली की आरती करे ।

दीवाली की आरती

ॐ जय महावीर प्रभो ! स्वामी जय महावीर प्रभो !
सिद्धारथ नृप नन्दन, त्रिसला पुत्र विभो ।ॐ जय०॥टेर॥
च्यौन हुआ श्री जी का, आषाढ शुदि छट्ट को ।
चवद सुपन से आये, त्रिशला के कूखको ॥ॐ जय०॥ १॥
चैत शुदि तेरस को, सुन्दर मुहूरत में ।
जन्म धरे जिनवरजी, सुर सुरकुमरी नमें ॥ॐ जय०॥२॥
छप्पन दिक्कुमरी मिल, अशुचि दूर करे ।
सुरपति मेरु शिखर पर, उच्छव भक्ति करे ॥ॐ जय०॥३॥
धन वृष्टि कर गये सुर, नन्दीश्वर तीरथ ।
राज्य में पुत्र महोत्सव, करे नृप सिद्धारथ॥ॐ जय०॥४॥
सिंह लछन से दीपे, कञ्चन सी काया ।
व्याह करे यशोदा से, सेवे नर राया ॥ॐ जय०॥५॥
वार्षिक दान को दे कर, सयम व्रत धारा ।
मिगसिर कृष्णा दसम को, बने जग आधारा ॥ॐ जय०॥६
उपसर्गो का सह कर, ज्ञान केवल पाया ।
शुदि वैशाख दशम को, बने जिन पति राया॥ॐ जय०॥७
समोसरन में वैठे, सभी जीव को तारे ।
बहतर वर्ष की आयू, क्रोडों सुर लारे ॥ॐ जय०॥८॥
अन्तिम चोमासा को, आय पावा में ।
हस्तिपाल [illegible], लेखनशाला में ॥ॐ

पद्मासन से देशना, दो दिन तक दीनी।
वेला का तप करके, शिव लक्ष्मी लीनी ॥ॐ जय०॥१०
कार्तिक कृष्णा अमावस, दीपावली ठाना।
इन्द्रादिक करे उत्सव, करे उत्सव राना ॥ॐ जय०॥११
आरता कल्याणक की, दर्शन जय जय कार।
केवली चारित्र बल से, जय गौतम गणधार ॥ॐ जय०॥१२॥

इसके बाद दीवाली का चैत्यवन्दन करे। विधि पूर्वक तीन खमासमण देने के बाद निम्न लिखित चैत्यवन्दन पढे ।

॥ दीवाली का चैत्यवन्दन ॥

जय जय श्रीजिन वर्द्धमान सावन समवाव।
सिंह लंछन सिद्धार्थ राय त्रिसला सुत भान ॥१॥
वरस बहुत्तर आऊ देह कर सत्त प्रमाण।
ऋषभादिक सम आस नम इक्ष्वाग सम जान ॥२॥
छठ भत्त संजम लियो रा कुंडलग्राम सुर ठाम।
गणधर इग्यारे सहित आपो शिवपुर स्वाम ॥३॥
चवदह सहस मुनि स्वामि सीस वत्तीस सहस।
श्रमणी श्रावक एक लाख गुणसठ सहस ॥४॥
तीन लाख श्राविका वलि सहस अढार।
सुर मातङ्ग सिद्धाइका नित सानिध कार ॥५॥

एकाकी पावा पुरिए उठ भक्त सुजाण ।
प्रभु पद्दाता अमृत पदे करो सघ कल्याण ॥६॥

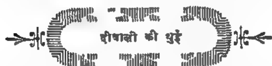
इसके बाद् जकिंचि, नमुत्थुण, जावतचेइआइ, जावतकेविसाहू, नमोऽर्हत्सिद्धा, उवसग्गहर के बाद निम्नलिखित निर्वाण कल्याणक स्तवन पढे ।

॥ निर्वाण कल्याणक स्तवन ॥

मारग देशक मोक्षनोरे, केवल ज्ञान निधान ।
भावदया सागर प्रभुरे, पर उपगारी प्रधानोरे ॥१॥
वीरप्रभु सिद्ध थया, सघ सकल आधारोरे ।
हिव इण भरतमा कुण करशे उपगारोरे ॥ वीर० २ ॥
नाथ विहूणो सैन्य ज्यूरे, वीर विहूणो रे सघ ।
साधे कुण आधारथी रे, परमानन्द अभङ्गोरे ॥वीर० ३॥
मात विहूणा बाल ज्यू रे, अरह्या परह्या अथडाय ।
वीर विहूणा जीवडारे, आकुल व्याकुल थायोरे ॥वीर० ४॥
सशय छेदक वीर नोरे, विरह ते केम खमाय ।
जेदीठे सुख उपजेरे, ते विण किम रहिवायोरे ॥ वीर ५ ॥
निर्यामक भव समुद्र नोरे, भव अटवी सार्थवाह ।
ते परमेसर विण मिल्यारे, किमवाधे उत्साहोरे ॥वीर० ६॥
वीर थका पन श्रुत तणोरे, हुतो परम अधार ।
हमणा श्रुत अधार छेरे, ए जिनआगम सारोरे ॥वीर० ७॥

इगकाले सविजीवनेरे, आगम थी आनन्द ।
ध्याता मेवो भविजनारे, जिन पडिमासुखकन्दोरे ॥वीर०८
गणधर आचारिज मुनिर, सहुने इणपर सिद्ध ।
भव भव आगम सगथारे, देवचन्द पदलीधारे ॥वीर०६॥

इसके बाद जयवीयराय, अनरथ, पढकर एक नवकार का ध्यान कर दीवाली की थुई पढे ।



मनोहर मूर्ति महावीर तणी, जिणे सोल पहर देशना पभणी ।
नव मल्ली नव लच्छी नृपति सुणी, कही शिव पाम्या त्रिभुवन धणी
शिव पहोंता ऋषभ चउदश भक्ते, बावीश लह्या शिव मास थिवे ।
छट्ठे शिव पाम्या वीर वली, कार्तिक वदी अमावस्या निर्मली ॥२॥
आगामी भावी भाव कह्या, दीवाळी कल्पे जेह लह्या ।
पुण्य पाप फल अज्झयणे कह्या, सवी तहत्ति करीने सद्द्या ॥३॥
सर्वा देव मिली उद्योत करे, परभाते गौतम ज्ञान वरे ।
ज्ञानविमल सद्गुण विस्तर, जिनशासनमा जयकार करे ॥४॥

॥ दीवाली पूजन समाप्त ॥

श्री गौतमस्वामी का बडा रास

वीर जिणेसर चरण कमल कमला कयवासो,
पणमवि पभणिसु सामिसाल गोयम गुरु रासो।
मण तणु वयण एकत करवि निसुणहु भो भविआ,
जिम निवसे तुम देहगेह गुणगण गहगहिया ॥१॥
जंबुदीव सिरि भरह खित्त खोणी तलमंडण,
मगध देश सेणीय नरेस रिउदल बलखंडण।
धणवर गुव्वर गाम नाम जिहां गुणगण सज्जा,
विप्प वसे वसुभूइ तत्थ तसु पुहवी भज्जा ॥२॥
ताण पुत्त सिरि इंदभूइ भूवलय पसिद्धो,
चउदह विज्जा विविह रूव नारी रस विद्धो (लुद्धो)।
विनय विवेक विचार सार गुणगणह मनोहर,
सात हाथ सुप्रमाण देह रूवहि रंभावर ॥३॥
नयण वयण कर चरण जिणवि पंकज जले पाडिअ,
तेजे तारा चंद सूर आकाशे भमाडिअ।
रूवे मयण अनंग करवि मेल्हिओ निरधाडिअ,
धीरमें मेरु गंभीर सिंधु चंगिम चयचाडिअ ॥४॥

पेखवि निरवम रूव जास जण जंपे किंचिय,
एकाकी किल भीत इत्थ गुण मेल्या संचिय ।
अहवा निश्चय पुव्वजम्मे जिणवर इण अंचिय,
रंभा पउमा गौरि गंग रतिहा विधि वंचिअ ॥५॥
नय बुध नय गुरु कवि न कोइ जसु आगल रहिआ,
पंचसया गुणपात्र छात्र हींडे परिवरिआ ।
करे निरंतर यज्ञकर्म मिथ्यामति मोहिअ,
अणचल होसे चरम नाण दंसणह विसोहिअ ।६॥

परतु

जंबुदीवह, जंबुदीवह, भरहवासंमि, भूमितल मंडण, मगधदेस, सेणिय नरेसर, वर गुव्वर गाम तिहां, विप्प वसे वसुभूय सुन्दर, तसु पुहवि भज्जा, सयल गुणगण रूवनिहाण, ताण पुत्त विज्जानिलो, गोयम अतिहि सुजाण ॥७॥

भाषा (ढाल दूसरी)

चरम जिणेसर केवलनाणी, चउविह संघ पइट्ठा जाणी ।
पावापुर सामी संपत्तो, चउविह देव निकायहिं जुत्तो ॥८॥
देवहि समवसरण तिहां कीजे, जिण दीठे मिथ्यामति छीजे ।
त्रिभुवनगुरु सिंघासणे बैठा, ततखिण मोह दिगंते पइट्ठा ॥९॥
क्रोध मान माया मदपूरा, जाए नाठा जिम दिन चौरा ॥
देव दुंदुभि आकाशे वाजी, धर्म नरेसर आव्यो गाजी ॥१०

कुसुम वृष्टि विरचे तिहा देवा, चउसठ इद्रज मागे सेवा।
चामरछत्रशिरोवरि सोहे, रूवहि जिणवर जग सहु मोहे ॥ ११
उपसम रसभर वर वरसता, योजनवाणि वखाण करता।
जाणिअ वर्धमान जिन पाया, सुरनर किंनर आवे राया ॥१२॥
कातसमोहिय जलहलकता, गयण विमाणहि रणरणकता॥
पेखवि इदभूइ मन चिंते, सुर आवे अम्ह यज्ञ हुवते ॥१३॥
वीर तरडक जिम ते वहिता, समवसरण पुहता गहगहिता।
तो अभिमाने गोयम जपे, तिणे अवसरे कोपे तणु कंपे ॥१४
मूढा लाक अजाणयु बोले, सुर जाणता इम काइ डोले।
मो आगल का जाण भणीजे, मेरु अवर किम ओपमा दीजे ॥१५॥

वस्तु

वीर जिणवर वीर जिणवर, नाणसपन, पावापुर सुर-महिअ पत्तनाह ससारतारण, तिहिं देव निम्महिअ, समोसरण बहु सुखकारण, जिणवर जग उज्जोअकर, तेजे करी दिणकार, सिंहासणे सामी ठव्यो, हुओ तो जय जयकार ॥१६।

भाषा (ढाल तीसरी)

तव चडिओ घणमाणगजे, इदभुइ भूदेव तो।
हुकारो कर सचरिअ, कवणसु जिणवर देवतो।
याजन भूमि समोसरण, पखे प्रथमारभ तो।
दहदिसि देखे विबुध वधू आवती ...

मणिमय तोरण दण्ड ध्वज, कासीस नव घाट तो ।
वयर विवर्जित जतुगण, प्रातिहारज आठतो ॥
सुर नर किंनर असुर वर, इद्र इद्राणी राय तो ।
चित्ते चमक्किय चिंतवे ए सेवता प्रभुपाय तो ॥१८॥
सहसकिरण सामी वीरजिण, पेरव रूप विशाल तो ।
एह असमंवसमर ए, साचो ए इद्रजाल तो॥
ता बोलावइ त्रिजगगुर, इदभूइ नामेण तो ।
श्रीमुखे ससय सामि सवे, फेडे वदपएण तो ॥१६॥
मान मल मद ठेली करी, भगतहिं नाम्यो सीस तो ।
पचसयासु व्रत लीओ ए, गोयम पहेलो सीस तो॥
बधव सजम सुणवि करे, अगनिभूइ आवेय तो ।
नाम लेइ आभास करे, ते पण प्रतिबोधेय तो ॥२०॥
इण अनुक्रमे गणहर रयण, थाप्या वीरे अग्यार तो ।
तव उपदसे भुवनगुरु, सयमशु व्रत बार तो ॥
बिहु उपवासे पारणु ए, आपणपे विहरत तो ।
गोयमसयम जग सयल, जयजयकार करत तो ॥२१॥

वस्तु

इदभूइअ, इंदभूइअ, चढिओ बहुमान, हुकारो करि कपतो, समासरणे पहुतो तुरतो, जे ससा सामि सवे, चरमनाह फेडे फुरत, वाधिबीज सजाय मन, गोयम भवह विरत्त, दिक्ख लेइ सिक्खा सहिअ, गणहर पय सपत्त ॥२२॥

भाषा (ढाल चौथी)

आज हुआ सुविहाण, आज पचेलीमा पुण्य भरो।
दीठा गोयम सामि जो निअ नयणे अमिय सरो।
(सिरि गोयम गणधार पंचसया मुनि परवरिय,
भूमिय करय विहार, भवियण जन पडिबोह करे)।§
समवसरण मझारि, जे जे संशय उपजए,
ते ते परउपकार, कारण पूछे मुनिपवरो ॥२३॥
जिहा जिहा दीजे दीक्ख तिहा तिहा केवल उपजेए।
आप कने अणहुन्त गोयम दीजे दान इम।
गुरु उपरि गुरु भक्ति, सामी गोयम उपनिय।
एणि छल केवलनाण रागज राखे रंग भरे ॥२४॥
जो अष्टापद सेल, वदे चढी चउवीस जिण।
आतमलब्धि वसेण, चरम सरीरी सोज मुनि।
इय देसणा निसुणेवि, गोयम गणहर संचरिय।
तापस पनरसएण, तो मुनि दीठा आवतो ए ॥२५॥
तपसोसिय निय अंग, अम्हा सगति नवि उपजे ए।
किम चढसे दृढ काय, गज जिम दीसे गाजतो ए।
गिरुआ एणे अभिमान, तापस जो मने चिंतवे ए।
तो मुनि चढिओ वेग, आलंबवि दिनकर किरण ॥२६॥
कंचणमणि निप्पन्न दंड कलस ध्वज वड सहिअ।

---

§ यह गाथा सर्वत्र नहीं मिलती, कहीं २ उपलब्ध है।

पयवि परमानन्द, जिणहर भरतसर महिअ ।
निय निय काय प्रमाण, चिहुदिसि साठअ जिणह बिंब
पणमवि मन उल्लास, गोयम गणहर तिहां वसिय ॥२७॥
वयरसामीना जीव, तियग् जूंभक देव तिहां ।
प्रतिबोध्याय पुंडरीक कडरीक अध्ययन भणी ।
वलता गोयम सामि, सवि तापस प्रतिबोध करे ।
लइ आपण साथ, चाले जिम जुथाधिपति ॥२८॥
खीर खांड घृत आण, अमिय वूठ अंगूठ ठवे ।
गोयम एकण पात्र, करावे पारणां सव ।
पचसया शुभ भाव, उज्जल भरिओ खीर मिस ।
साचा गुरु संयोग, कवल ते केवल रूप हुआ ॥२९॥
पचसया जिणनाह, समवसरण प्राकारत्रय ।
पखवि केवलनाण उपना उज्जोय करे ।
जाणें जणवि पीयूष, गाजती घण मेघ जिम ।
जिणवाणी निसुणवि, नाणी हुआ पचसया ॥३०॥

वस्तु

इण अनुक्रम, इण अनुक्रम, नाण संपन्न पन्नरहसय उपन्न परिवरि, हरि दुरिअ, जिणनाह वंदइ, जाणेवि जगगुरु वयण, तिहिंनाण अप्पाण निंदइ, चरम जिणेसर इम भणी, गोयम म करिस खेव । छेह जाय आपण सही, होस्यां तुल्ला देव॥३१॥

भाषा (ढाल पाचमी)

सामियो ए वीर जिणंद, पूनमचंद जिम उल्लसिय ।
विहरियो ए भरहवासमि, वरस बहुत्तर संवसिय ।
ठवतो ए कणय पउमेण, पायकमल संघे सहिय ।
आवियो ए नयणानन्द नयर पावापुर सुरमहिय ॥३२॥
पेखियो ए गोयमसामि, देवसमा प्रतिबोध करे ।
आपणो ए त्रिशलादेवि, नंदन पुहतो परमपए ।
वलता ए देव आकाश, पेखवि जाण्या जिण समे ए ।
तो मुनि ए मनविखवाद, नादभेद जिम उपनो ए ॥३३॥
इण समे ए सामिय देखि, आपकनासू टालियो ए ।
जाणतो ए तिहूअण नाह, लोक विवहार न पालियो ए
अतिभलो ए कीधलो सामि, जाण्या केवल मागसे ए ।
चिंतव्यो ए बालक जेम, अहवा केडें लागसे ए ॥३४॥
हूँ किम ए वीर जिणंद, भगतहिं भोलें भोलव्यो ए ।
आपणो ए ऊँचलो नेह, नाह न संपे साचव्यो ए ।
साचो ए वीतराग, नेह न हेज टालियो ए ।
तिणसमे ए गोयम चित्त, राग वैरागें वालियो ए ॥३५॥
आवतो ए जो उल्लट्ट, रहितो रागें साहियो ए ।
केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम सहिज उमाहियो ए ।
तिहूअण ए जयजयकार, केवल महिमा सुर करे ए ।
गणधरु ए करय वखाण, भविया भव जिम निस्तरे ए ॥३६॥

वस्तु

पढम गणहर पढम गणहर वरस पचास, गिहवासें सवसिय तीसवरससजम विभूसिय, सिरि केवलनाणपुण, वार वरस तिहुअण नमसिय, राजगृही नयरी ठव्या, वाणवह वरसाउ, सामी गोयम गुणनिलो नाम सिवपुर ठाउ ॥३७॥

भाषा (ढाल दुहा)

जिम सहकार कोयल टहुके, जिम कुसुमायन परिमल महके, जिम चदन सौगधनिधि। जिम गगाजल लहिरया लहके, जिम कणयाचल तजें झलके, तिम गोयम सोभाग-निधि ॥३८॥ जिम मानसरोवर निवस हसा, जिम सुरतर वह कणयवतसा, जिम महुयरराजीवयन। जिम रयणायर रयणें विलस, जिम अबर तारागण विकस, तिम गोयम गुरु कल घन ॥३९॥ पूनमनिसि जिम ससियर सोहे, सुर तर महिमा जिम जगमाहे, पूरब दिसि जिम सहसकरो। पचानन जिम गिरिवर राज नर वइ घर जिम मगल गाज, तिम जिनशासन मुनि पवरो ॥४०॥ जिम गुरु तरवर सोहे साखा, जिम उत्तम मुख मधुरी भाषा, जिम वन केतकि महमहे ए। जिम भूमिपति भुयबल चमके, जिम जिनम-देर घटा रणके, गोयम लवधें गहगह्या ए

[illegible] कर चढीशा आज, सुरतर सारे वांछे

[illegible] वंशि हुआ ए। [illegible] पर

महासिद्धि आवे धामी, सामी गोयम अणुसरी ए ॥४२॥
प्रणव अक्षर पहिलो पभणी जे, माया बीजो श्रवण सुणी
ज । श्रीमिति सोभा संभवो ए । देवा धुर अरिहंत नमीजे
विनय पहू उवझाय थुणीजें इण मंत्रे गोयम नमो ए
॥४३॥ परघर वसता काय करीजे, देस देसांतर काय
भमी ज कवण काज आयास करो। प्रह उठी गोयम
समरीज, काज समग्गल ततखिण सीझे नवनिधि विलसे
तिहा घर ए ॥४४॥ चवदयसय बारोत्तर वरसे, गोयम
गणहर केवल दिवस, कीयो कवित उपगारपरो । आदहि
गल ए पभणीजें, परब महोच्छव पहिलो दीजे, रिद्धि-
द्धि कल्याण करो ।४५॥ धन माता जिण उयरे धरियो
न्य पिता जिण कुल अवतरिया, धन्य सुगुरु जिण दीक्खि-
ए । विनयवंत विद्या भंडार, तसु गुण पुहवी न
भइ पार, वड जिम साखा विस्तरो ए । गोयमस्वामीना
स भणीजे, चउविह संघ रलियायत कीजे, रिद्धि-वृद्धि
याण करो ॥४६॥ कुंकुम चन्दन छडो दिवरावो,
क मोतीना चोक पूरावो, रयण सिंहासण बेसणा ए
तठा गुरु देशना देशी, भविक जीवना काज सरसी,
नित मंगल उदय करो ॥४७॥

॥ इति श्री गौतम स्वामी का रास संपूर्ण ॥

वस्तु

पढम गणहर पढम गणहर वरस पचास, गिहवासें संवसिय तीसवरससंजम विभूसिय, सिरि केवलनाणपुण, बार वरस तिहुअण नमंसिय, राजगृही नयरी ठव्यो, बाणवइ वरसाउ, सामी गोयम गुणनिलो होस सिवपुर ठाउ ॥३७॥

भाषा (ढाल छट्ठी)

जिम सहकार कोयल टहुके, जिम कुसुमावन परिमल महके, जिम चंदन सौगंधनिधि। जिम गंगाजल लहिरयां लहके, जिम कणयाचल तेजें झलके, तिम गोयम सौभाग-निधि ॥३८॥ जिम मानसरोवर निवसे हंसा, जिम सुरतरु-वर कणयवतंसा, जिम महुयर राजीववन। जिम रयणायर रयणें विलसे, जिम अंबर तारागण विकसे, तिम गोयम गुरु केवल घने ॥३९॥ पूनमनिसि जिम ससियर सोहे, सुरतरु महिमा जिम जगमोहे पूरव दिसि जिम सहसकरो। पंचानन जिम गिरिवर राजे नरवइ घर जिम मयगल गाजे, तिम जिनशासन मुनि पवरो ॥४०॥ जिम सुरतरुवर सोहे साखा, जिम उत्तम मुख मधुरी भाषा, जिम वन केतकि महमहे ए। जिम भूमिपति भुयबल चमके, जिम जिनम-दिर घंटा रणके, गोयम लबधे गहगह्या ए ॥४१॥ चिंता-मणि कर चढीयो आज, सुरतर सारे वंछिय काज, काम-कुंभ सहु वशि हुआ ए। काम गवी पूरे मन कामी, अष्ट-

महासिद्धि आवे धामी, सामी गोयम अणुसरी ए ॥४२॥ प्रणव अक्षर पहिलो पभणी जें, माया बीजो श्रवण सुणी जें। श्रीमति सोभा सभवो ए। देवा धुर अरिहंत नमीजें विनय पहू उवझाय थुणीज इण मंत्रें गोयम नमो ए ॥४३॥ परघर वसता काय करीजे, देस देशांतर काय भमी जें कवण काज आयास करो। प्रह ऊठी गोयम समरीज, काज समग्गल ततखिण सी,झे नवनिधि विलसे तिहां घर ,ए ॥४४॥ चवदयसय बारोतर वरसे, गोयम गणहर केवल दिवसें, कीयो कवित उपगारपरो। आदहि मंगल ए पभणीजें, परव महोच्छव पहिलो दीज, रिद्धि-वृद्धि कल्याण करो। ४५॥ धन माता जिण उदर धरियो धन्य पिता जिण कुल अवतरियो, धन्य सुगुरु जिण दीखिया-यो ए। विनयवंत विद्या भंडार, तसु गुण पुहवी न लब्भइ पार वड जिम साखा विस्तरो ए। गोयमस्वामीना रास भणीजें, चउविह संघ रलियायत कीजे, रिद्धि-वृद्धि कल्याण करो ॥४६॥ कुंकुम चन्दन छडो दिवरावो, माणक मोतीना चौक पुरावो, रयण सिंहासण बेसणा ए तिहां बैठी गुरु देशना देशी भविक जीवना काज सरसी, नित नित मंगल उदय करो ॥४७॥

॥ इति श्री गौतम स्वामी का रास सम्पूर्ण ॥